



अवनी
'वार्षिक प्रतिवेदन'
2007 - 08

पोस्ट त्रिपुरादेवी वाया बेरीनाग, जनपद पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड, पिन-262531

टेलीफैक्स : 05964 244943

ई-मेल : info@avani-kumaon.org

वेबसाइट : www.avani-kumaon.org

विषय सूची

1. परिचय	3
2. अक्षय ऊर्जा तकनीकी का विकास एवं प्रचार-प्रसार	6
2.1 सोलर फोटोवोल्टाईक	
2.2 सोलर थर्मल	
2.3 मैकेनिकल कार्यशाला	
2.4 पाईन नीडल गैसीफायर	
2.5 बायोगैस	
3. नये डिजाईनों के विकास से परम्परागत हस्त-शिल्प का संरक्षण —हस्तनिर्मित प्राकृतिक रंग के रेशम ऊन के उत्पाद	11
3.1 अवनी टीम का क्षमता विकास	
3.2 उत्पाद डिजाईन	
3.3 मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग	
3.4 प्राकृतिक रंगाई	
3.5 हस्त-शिल्प में उपयुक्त तकनीकी का प्रयोग	
4. महिला सशक्तीकरण	20
4.1 स्वयं सहायता समूह	
4.2 बालिका शिक्षा	
4.3 वयस्क साक्षरता	
4.4 बाल खेल गृह	
5. वर्षा के जल का संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल का पुनः प्रयोग	23
6. प्राकृतिक कृषि	24
7. रेशम कीटपालन — वन्य रेशम ईरी एवं मूंगा की खेती	26
7.1 प्रशिक्षण एवं परीक्षण कोकून पालन	
8. स्वास्थ्य सुरक्षा	27
8.1 स्वास्थ्य बीमा	
8.2 स्वास्थ्य शिविर	
9. कार्यशालाएँ एवं बैठकें	28
10. विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक	29
11. अवनी में मेहमान	29
12. अन्य संस्थानों से सहयोग	30
13. हमारे वित्तीय सहयोगी	30
14. व्यक्तिगत दानदाता 2003—2008	31
15. केस स्टडी	32
16. वित्तीय सारांश	37

परिचय :-

‘अवनी’ संस्था उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ क्षेत्र में विगत 11 वर्षों से परंपरागत हस्तशिल्प, उपयुक्त तकनीकी एवं कृषि आधारित कार्यक्रमों के विकास के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर जीविकोपार्जन के अवसर सृजन हेतु कार्यरत है। मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हमारे कार्यक्रमों का मूल सिद्धांत है। वर्तमान में हम जनपद बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ के 82 गाँवों में कार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष के दौरान हमने ठंडे क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप निष्प्रयोज्य जल के पुनः प्रयोग हेतु एक संयंत्र विकसित किया है। इस संयंत्र के माध्यम से हमारे केन्द्र में प्रयुक्त होने वाले संपूर्ण जल, जिसमें प्राकृतिक रंगाई के बाद बचा जल भी शामिल है को पुनः प्रयोग करने योग्य बनाया गया है। इस जल का प्रयोग वर्तमान में हमारे केन्द्र में जैविक सब्जी उत्पादन हेतु किया जा रहा है। यह तकनीकी उत्पादन एवं उपभोग हेतु स्वच्छ ऊर्जा के प्रयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस तकनीकी के माध्यम से रेशम एवं ऊनी हस्तशिल्प कार्यक्रम को और अधिक पर्यावरण मित्र बनाने में सहायता मिली है। यह तकनीकी पानी की विकट समस्या से जूझ रहे इस क्षेत्र के लिये जल संरक्षण का एक अच्छा उदाहरण है।

विगत वर्ष हमने सामूहिक रूप से सीखने एवं विकसित होने के अलावा, अपने अनुभवों का प्रयोग भविष्य की योजना निर्माण हेतु भी किया। इस कार्य में हमने लंदन स्थित संस्थान ‘बेसिक नीड’ से सहायता प्राप्त करके अवनी ‘कोर टीम’ के साथ रणनीतिक कार्ययोजना निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला के परिणामस्वरूप हमने अगले 5 वर्ष की कार्ययोजना तैयार की है। इस कार्ययोजना में मुख्य रूप से अब तक किये गये कार्य को और अधिक मजबूत बनाते हुए अन्य इच्छुक संगठनों के साथ प्रशिक्षण के माध्यम से अपने अनुभवों को बाँटने पर ध्यान केन्द्रित करने पर जोर दिया गया है। इसके साथ ही नये क्षेत्रों, खासकर स्वास्थ्य क्षेत्र की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की गई।

इसी परिपेक्ष में इस कार्य योजना के अंतर्गत पिरूल से ग्रामीण ऊर्जा आवश्यकताओं की आपूर्ति एवं अतिरिक्त ऊर्जा को ग्रामीण समुदाय के आय उपार्जन के लिये बिक्री का एक प्रस्ताव उभर कर आया है। इस तकनीकी में हमारी बहुमूल्य जैव विविधता के संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण स्तर पर ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं आजीविका के अवसरों की उपलब्धता की भी संभावना विद्यमान है। आगामी वर्ष में इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाये जायेंगे।

‘विश्व पर्वतवासी संगठन’ के माध्यम से हम प्राकृतिक रंगाई एवं उपयुक्त तकनीकी पर केन्द्रित एक संसाधन केन्द्र की स्थापना की दिशा में कार्यरत हैं। यह केन्द्र उन विभिन्न केन्द्रों में से एक होगा जो कि संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र में विभिन्न संगठनों द्वारा अपने क्षेत्रों में स्थापित किये जा रहे हैं। संसाधन केन्द्रों की सहायता से एक ऐसा मंच उपलब्ध होगा जिसके माध्यम से हम अपने कार्यों का दस्तावेजीकरण करके कार्यों का प्रचार-प्रसार कर पायेंगे।

हमारे एक शुभचिंतक, संगीतकार एवं डाक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता, श्री चिनमया डनस्टर द्वारा अवनी के कार्यों पर 2 लघु फिल्में बनाई गई हैं। इन फिल्मों के माध्यम से हमारे कार्यों के प्रति रुचि बढ़ी है।

हमारा कार्य 6 फील्ड सेंटर्स के माध्यम से निरंतर जारी है। प्रत्येक सेंटर के माध्यम से आस-पास के गाँवों में समस्त संचालित कार्यक्रमों का समन्वय किया जा रहा है। ग्राम चनकाना एवं गढ़तिर के अलावा अन्य सभी के पास अपने भवन हैं। इन भवनों का निर्माण ग्रामीणों द्वारा दान दी गई जमीन पर किया गया है। चनकाना एवं गढ़तिर के दोनों सेंटर्स के लिये समन्वित केन्द्र के भवन का निर्माण कार्य ग्राम लिंगुरानी में प्रगति पर है जोकि दोनों गाँवों के मध्य में स्थित है। ग्राम लिंगुरानी के श्री हयात सिंह बोरा द्वारा इस केन्द्र के निर्माण हेतु भूमि दान दी गई है।

प्रत्येक केन्द्र के माध्यम से संचालित कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है—

क्रम सं०	गाँव का नाम	कताई बुनाई	सौर उपकरण स्थापना	रेशम की खेती	महिला समूह ऋण एवं बचत	महिला समूह के साथ आय उपाजक कार्यक्रम	वर्मि कम्पोस्टिंग	बायो गैस	बालिका शिक्षा	वयस्क साक्षरता	चीड़ की पत्ती संग्रहण	वर्षाती जल संग्रहण
धरमघर केन्द्र												
1	सिमगढ़ी	✓	✓		✓	✓	✓		✓			✓
2	सौक्यूड़ा	✓	✓									✓
3	धरमघर	✓	✓		✓	✓						
4	महरौड़ी		✓	✓	✓	✓	✓		✓			✓
5	लमजिंगड़ा		✓		✓	✓	✓					
6	कराला	✓										
7	दसौली	✓										
8	थुमा	✓										
9	धुरा	✓										
10	दराती	✓										
11	बास्ती			✓	✓							
12	दुदिला				✓							
13	एराड़ी				✓							
दिगोली केन्द्र												
1	माणा	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓			
2	दिगोली	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓
3	धौलानी	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
4	मटकोली	✓	✓	✓	✓	✓	✓		✓			
5	कालीगाड़	✓										
6	नायल	✓										
7	डाना		✓	✓			✓					
8	रैतोली			✓								
9	देवल		✓						✓			
10	सिलिगिया		✓		✓	✓						
11	चन्तोला		✓	✓	✓	✓	✓					✓
12	औलानी	✓	✓		✓	✓			✓			
13	सिमायल	✓	✓		✓	✓						✓
14	ठांगा	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
15	रावतसेरा		✓									
16	भयूँ		✓					✓				
17	नरगोली			✓								
18	देवलेत					✓						
त्रिपुरादेवी केन्द्र												
1	त्रिपुरादेवी	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
2	भंडारीगाँव	✓										
3	राईआगर	✓										✓
4	बना	✓			✓	✓						
5	मनीपुर	✓										
6	हस्यूड़ी	✓			✓						✓	
7	बोराखेत	✓										
8	मुँगराऊँ	✓			✓	✓						
9	बेरीनाग	✓			✓							
10	सेरा पहर				✓	✓						
11	रावलगाँव				✓	✓	✓					
12	सेला				✓							

क्रम सं०	गाँव का नाम	कताई बुनाई	सीर उपकरण स्थापना	रेशम की खेती	महिला समूह ऋण एवं बचत	महिला समूह के साथ आय उपार्जन कार्यक्रम	वर्मि कम्पोस्टिंग	बायो गैस	बालिका शिक्षा	वयस्क साक्षरता	चीड़ की पत्ती संग्रहण	वर्षाती जल संग्रहण
13	कन्यूरपानी				✓							
14	ज्यूलागाँव				✓							
15	पिपली				✓							
16	जखेड़ी			✓	✓							
17	स्याल्वे			✓								
18	वर्षायत			✓								
19	हिपा		✓	✓								
20	गडेरा			✓								
21	बुसैल		✓									
22	सलौड़		✓									
23	गुरैना रजवार		✓									
24	बहिलकोट		✓									
25	सेरागढ़ा		✓									
25	फालरौ खरचौड़		✓									
27	राई			✓								
28	ब्याती			✓								
29	भिनगड़ी			✓								
30	बल्टा				✓				✓			
31	सानीखेत			✓								
32	मुसलगाड़			✓								
चनकाना केन्द्र												
1	चनकाना	✓		✓	✓	✓	✓			✓		
2	मूनी	✓										
3	गोदा	✓										
4	पुँगरखोली	✓										
सुकना केन्द्र												
1	सुकना	✓	✓	✓	✓	✓	✓			✓		✓
2	घांगल	✓	✓					✓				
3	बानड़ी				✓							
4	राममंदिर	✓										
5	धौलानी	✓										
6	ग्वाल			✓								
7	गोल्ती		✓	✓								
गढ़तिर केन्द्र												
1	गढ़तिर	✓										
2	भनेलगाँव	✓										
3	पुरिंग	✓										
4	पटोली	✓										
5	बेलकोट			✓								
6	पुरानाथल			✓								
7	डांगीगाँव			✓								

वर्ष 2007-08 में अवनी द्वारा संपादित कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है-

2. अक्षय ऊर्जा तकनीकि का विकास एवं प्रचार-प्रसार :-

हम वर्ष 1997 से इस क्षेत्र में सौर ऊर्जा तकनीकि के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यरत हैं। पिछले 11 वर्षों में अपने कार्यक्रमों के दौरान हमने 238 गाँवों एवं तोकों के 1650 परिवारों को सौर ऊर्जा से लाभान्वित किया है। अवनी ने उपयुक्त तकनीकि के नये प्रयोगों हेतु दिये जाने वाले एशडन अवार्ड हेतु भी आवेदन किया। इसके तहत हमें अपने कार्यक्रमों के विकास हेतु 1000 पाऊंड का सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस वर्ष हमने गरीब से गरीब परिवारों तक सौर तकनीकि को पहुँचाने हेतु एलईडी आधारित सस्ते सौर उपकरण विकसित किये हैं।

यह कार्यक्रम 23 ग्राम स्तरीय सौर ऊर्जा समितियों द्वारा संचालित है, जो कि वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर हैं तथा जिनके पास स्थापित सौर उपकरणों के रख-रखाव हेतु प्रशिक्षित तकनीशियनों की एक टीम है।

(अ) प्रचार-प्रसार :-

- इस वर्ष अवनी द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के 5 गाँवों एवं जिला चंपावत में 'सीबेड' द्वारा स्थापित एक सहकारिता में कुल मिलाकर 83 सौर उपकरण स्थापित किये गये हैं।
- उपरोक्त में से 16 उपकरण गरीब परिवारों को सब्सिडाईज्ड कीमत पर उपलब्ध कराये गये हैं। इस हेतु तकनीकि कोष से ऋण भी उपलब्ध करवाया गया।
- गाँवों में 28 एलईडी आधारित टार्च भी बिक्री किये गये। हमारे द्वारा जिला नैनीताल में पंगोट स्थित 'रामकृष्ण शारदा मिशन' एवं रानीखेत के मजखाली में 3 स्ट्रीट लाईटें स्थापित की गईं।
- अवनी केन्द्र धरमघर एवं सुकना में कमशः 800 वाट एवं 600 वाट क्षमता के पावर प्लांट स्थापित किये गये। इनका प्रयोग रोशनी एवं कंप्यूटर संचालन हेतु किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के अन्य बिन्दु निम्न प्रकार हैं-

- सौर ऊर्जा समितियों द्वारा गरीब ग्रामीण परिवारों को सौर उपकरणों की खरीद हेतु ऋण प्रदान किया गया। 182 परिवारों को अब तक कुल ₹0 10,90,180 ऋण प्रदान किया गया। जिसमें से विगत 5 वर्षों में ₹0 7,96,190 की धनराशि उपभोक्ताओं द्वारा वापस कर दी गई है।
- सौर ऊर्जा चालित चर्खों एवं रोशनी उपकरणों की स्थापना हेतु ₹0 74,700 की राशि तकनीकि कोष से ऋण के रूप में उपलब्ध कराई गई। इसमें से 20,600 की धनराशि विगत वर्ष वापस की जा चुकी है।
- वर्ष 2008 तक 23 ग्रामीण समितियों द्वारा कुल ₹0 32,21,074 की धनराशि रख-रखाव कोष में जमा की गई।
- ग्रामीण स्तर पर एकत्रित कोष से समितियों द्वारा पूर्व में स्थापित उपकरणों की 7 बैट्रियां बदली गयीं।
- विगत वर्ष समितियों द्वारा कुल ₹0 91,280 की धनराशि तकनीशियनों के वेतन खाते में जमा की गयी।
- अवनी की सौर कार्यशाला में 9 तकनीशियनों की टीम है। इनमें से 4 महिला तकनीशियन हैं। इस वर्ष तकनीशियनों द्वारा कुल 146 फील्ड भ्रमण किये गये जिसमें से 55 भ्रमण महिला तकनीशियनों द्वारा किये गये।
- समितियों द्वारा एकत्रित कोष का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है-

तालिका 1

ग्राम समिति का नाम	2007-08 में रख-रखाव कोष में जमा धनराशि	31 मार्च 2008 तक जमा कुल धनराशि	वर्ष 2007-08 में दिया गया ऋण	31 मार्च 2008 तक दिया गया कुल ऋण	31 मार्च 2008 तक कुल ऋण वापसी	वर्ष 2007-08 में समितियों द्वारा सौर तकनीशियन के वेतन खाते में अंशदान
देवल-ए	1,180	92,324	0	11,980	7,100	0
देवल ब	0	6,270	0	0	0	1,000
सौक्युड़ा	0	37,635	0	41,930	22,500	0
सिलिगिया	1,830	1,19,918	0	1,01,830	39,650	820
माणा	1,330	1,14,664	0	95,840	74,280	1,700
महरौड़ी	6,200	20,4,446	0	3,77,370	3,45,100	0
ठांगा	1,420	26,6,126	0	2,33,610	1,87,700	0
उडेरिया	0	71,315	0	0	0	0
रावतसेरा	1,250	84,238	0	5,990	3,900	1,750
भयूँ	0	1,73,838	0	0	0	0
चंतोला	2,710	1,45,926	0	47,920	26,940	0
सिमगढ़ी	0	1,63,130	0	1,25,790	44,800	0
उडियारी	0	50,602	0	0	0	0
धरमघर	0	9,028	0	0	0	0
क्वेराली	0	8,206	0	0	0	0
सिमायल	0	1,74,748	0	47,920	44,220	0
कुल	15,920	17,22,414	0	10,90,180	7,96,190	5,270

तालिका 2

ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के तहत लाभान्वित परिवार	वर्ष 2007-08 में रखरखाव कोष में जमा धनराशि	मार्च 2008 तक जमा कुल धनराशि	वर्ष 2007-08 में समितियों द्वारा तकनीशियन वेतन खाते में अंशदान
बुसैल	4,200	2,97,900	4,200
गुरना रजवार	5,000	52,880	5,000
बहिलकोट	0	49,440	0
हिपा	33,300	2,74,200	23,300
गोल्ती	19,410	4,03,110	19,410
सेरागढ़ा	17,000	2,99,400	17,000
फालरौ खरचौड़	7,100	1,21,730	17,100
कुल	86,010	14,98,660	86,010

सौर कार्यशाला द्वारा निर्मित वस्तुओं का विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3

बस्तु विवरण	निर्मित	बिक्री
लालटेन 12 वोल्ट	17	13
लालटेन 6 वोल्ट	80	44
कुल लालटेन	97	57
घरेलू सौर बत्ती	37	26
सोलर टार्च	—	28
बैट्री	—	50

लालटेन बिक्री से आय	1,46,020
कम्पोनेंट बिक्री से आय	81,741
रिपेयर से आय	14,913
घरेलू सौर बत्ती बिक्री से आय	5,22,670
टार्च बिक्री से आय	7,875
बैट्री बिक्री से आय	67,555
अन्य आय	10,087
कुल	8,50,861

(ब) क्षमता विकास :-

इस वर्ष ग्राम महरौड़ी, ठांगा, सिमायल, हिपा एवं बुसैल के 5 युवाओं को सौर तकनीशियन के रूप में प्रशिक्षित किया गया। 2 तकनीशियनों को आर्क वैल्डिंग एवं गैसीफायर के संचालन हेतु प्रशिक्षित किया गया। समाजकार्य एवं अनुसंधान केन्द्र सिक्किम के 2 प्रतिभागियों को सौर तकनीकी एवं सोलर वाटर हीटर के निर्माण हेतु अवनी केन्द्र में प्रशिक्षित किया गया।

अवनी के 2 तकनीशियनों द्वारा 'समाजकार्य एवं अनुसंधान केन्द्र' तिलोनिया, राजस्थान में आयोजित 'पैराबोलिक सोलर कुकर' के निर्माण संबंधी प्रशिक्षण में सहभागिता की गई।

प्रशिक्षणों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है—

तालिका 4

गाँव/संस्थान का नाम	प्रशिक्षणार्थी संख्या	प्रशिक्षण विषय	प्रशिक्षण अवधि
समाजकार्य एवं अनुसंधान केन्द्र सिक्किम	2	सौर तकनीकी एवं मैकेनिकल	30-4-07 से 22-7-07
महरौड़ी	1	सौर तकनीशियन	12-4-07 से 12-10-07
ठांगा	1	सौर तकनीशियन	27-5-07 से 27-11-07
सिमायल	1	सौर तकनीशियन	27-6-07 से 27-12-07
हिपा	1	सौर तकनीशियन	25-7-07 से 25-1-08
बुसैल	1	सौर तकनीशियन	25-7-07 से 13-11-07

राईआगर	1	गैसीफायर एवं आर्क वैल्विंग	जारी
ठांगा	1	गैसीफायर एवं आर्क वैल्विंग	जारी
बना एवं माणा	2	पैराबोलिक सोलर कुकर (समाजकार्य एवं अनुसंधान केन्द्र तिलोनियां में)	8-1-08 से 28-3-08

2.2 सोलर थर्मल उपकरण :-

(अ) सोलर वाटर हीटर :-

सोलर वाटर हीटरों का निर्माण एवं स्थापना का कार्य जारी है।

उपभोक्ताओं को वर्षात के मौसम में भी गर्म पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु हमने वाटर हीटर को बुखारी युक्त बनाया है। इसकी सहायता से किफायती तरीके से लकड़ी का प्रयोग करते हुए वर्षा एवं सर्दियों के दिनों में भी पानी गर्म किया जा सकता है।

इस वर्ष हमारे द्वारा कुल 5 सोलर वाटर हीटर स्थापित किये गये। इनमें से एक वाटर हीटर अवनी सामुदायिक केन्द्र में भी स्थापित किया गया।

वाटर हीटरों की बिक्री से कुल ₹0 2,26,300 की आय अर्जित की गयी।

विवरण तालिका 5 में दिया गया है।

तालिका 5

संस्थान	स्थान	सोलर वाटर हीटर की क्षमता	संख्या
व्यक्तिगत आवास	नैनीताल	500 ली०	1
व्यक्तिगत आवास	नैनीताल	100 ली०	1
व्यक्तिगत आवास	रानीखेत	100ली०	1
अवनी सामुदायिक केन्द्र	त्रिपुरादेवी	500 ली०	1

सोलर वाटर हीटर के डिजाइन में सुधार :-

हमने सोलर वाटर हीटरों की गुणवत्ता एवं क्षमता विकास का कार्य निरंतर जारी रखा। सुधार में निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया गया है-

- इंसुलेटिड टैंक में हीट एक्सचेंज सिस्टम स्थापित किया गया है ताकि सर्दियों में तापमान बरकरार रहे।
- भंडारण टैंक को जंग से बचाने एवं लंबे समय तक कार्यरत रखने हेतु जंगरोधी स्टील शीट का प्रयोग किया गया है।
- वर्षा एवं बादल के दिनों में भी गर्म पानी करने हेतु बुखारी युक्त वाटर हीटरों का निर्माण, ताकि किफायती तरीके से लकड़ी का प्रयोग किया जा सके।

(ब) सोलर ड्रायर :-

इस वर्ष हमने सोलर ड्रायर के डिजाईन में सुधार की दिशा में भी कार्य किया। हम सोलर ड्रायर को अधिक कार्यकुशल, आकार में छोटा एवं कम लागतयुक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

2 सोलर ड्रायरों की स्थापना ग्राम माणा एवं दिगोली में महिला समूहों हेतु की गई है। इनका प्रयोग रंगाई सामग्री एवं मसालों को सुखाने एवं प्रसंस्करण में किया जा रहा है। इस वर्ष महिलाओं द्वारा 83.75 किग्रा रंगाई सामग्री का प्रसंस्करण सोलर ड्रायर के माध्यम से किया गया।

इन 2 गाँवों में महिलाओं द्वारा रंगाई सामग्री के प्रसंस्करण के माध्यम से ₹0 37,324 की आय उपार्जित की गई।

हमने इस वर्ष UNWDP कार्यालय देहरादून में भी 1 सोलर ड्रायर की स्थापना की है। सोलर ड्रायर की स्थापना से ₹0 25,000 की आय उपार्जित की गई।

2.3 मैकेनिकल कार्यशाला :-

त्रिपुरादेवी केन्द्र स्थित मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा सोलर वाटर हीटर निर्माण के साथ-साथ फील्ड सेंटर्स में प्लंबिंग एवं गैस फिटिंग का कार्य किया गया। तकनीशियनों द्वारा अवनी कार्यालय एवं अवनी सामुदायिक केन्द्र की छतों की पेंटिंग का कार्य भी किया गया।

मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा छत की ट्रेसिंग, रोशनदान, सीढ़ी, रैलिंग, परलियन, खिड़की फ्रेम का भी निर्माण किया गया।

कार्यशाला द्वारा निर्मित वस्तुओं का विवरण निम्नलिखित प्रकार है -

तालिका 6

सोलर वाटर हीटर हेतु निर्मित पार्ट	कुल
कलक्टर पैनल	18
टैंक स्टैंड	2
आटो कट टैंक	2
इंसुलेटिड टैंक	1
कलक्टर बॉक्स	15

तालिका 7

अन्य वस्तुएँ	संख्या
ट्रेस	1
स्ट्रीट लाईट स्टैंड	8
खिड़की झोप	4
सोलर पैनल स्टैंड	1
बुखारी	3
खिड़की फ्रेम	2
दरवाजा फ्रेम	1
पावर प्लांट स्टैंड	2
सोलर ड्रायर	1
बंक बैड	2
खिड़की जाली फिटिंग	13
जल संशोधन टैंक कवर	12
पर्दा राड हुक	70
कुल निर्मित	121

वर्ष के दौरान मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा टैक्सटाइल फिनिशिंग हेतु 94.5 घंटे की विद्युत आपूर्ति कलैन्ड्रिंग मशीन के लिए की गई तथा ₹0 11,370 की आय अर्जित की गई ।

मैकेनिकल कार्यशाला द्वारा अर्जित कुल आय	
फैब्रिकेशन से आय	90,242
सोलर ड्रायर बिक्री	25,000
सोलर वाटर हीटर स्थापना एवं बिक्री	2,48,060
कलैन्ड्रिंग	11,370
सेवा शुल्क	40,555
प्रशिक्षण से आय	30,000
कुल	4,45,227

2.4 पाईन नीडल गैसीफायर (पिरुल से बिजली निर्माण) :-

अवनी केन्द्र में स्थापित 'पाईन नीडल गैसीफायर' प्लांट विगत 2 वर्षों से कार्यरत है। जंगलों को आग से बचाने एवं जैव विविधता संरक्षण में इस तकनीक के प्रयोग की संभावना को देखते हुए उत्तराखंड सरकार द्वारा हमें वन संरक्षकों के सम्मेलन में प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित किया गया। इस तकनीक की जानकारी एवं आर्थिक साध्यता की जानकारी हेतु उत्तराखंड राज्य के वरिष्ठ वन अधिकारियों द्वारा हमसे संपर्क स्थापित किया गया है।

वर्तमान में हम एक ग्राम सभा के 3 तोकों हेतु पाईन नीडल गैसीफायर की स्थापना हेतु प्रस्ताव तैयार करने की प्रक्रिया आरंभ कर चुके हैं। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य इन गाँवों की जलाऊ ईंधन की आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ अतिरिक्त उर्जा को बिजली के रूप में बेचकर गरीब ग्रामीण परिवारों हेतु आय उपार्जन के स्रोत उपलब्ध करवाना है। वन संरक्षकों के सम्मेलन में प्रस्तुतीकरण के बाद हम वन विभाग के साथ इसकी कार्ययोजना बना रहे हैं तथा वन विभाग द्वारा इस कार्यक्रम के क्रियान्वन में सक्रिय भागीदारी का भरोसा दिया गया है। आगामी वर्ष में इस दिशा में ठोस परिणाम मिलने के उम्मीद है।

2.5 बायोगैस :-

रसोई में ईंधन की पूर्ति हेतु बायोगैस के प्रचार - प्रसार हेतु इस वर्ष हम ग्राम सानीउडियार में 2 क्यूबिक मी0 का केवल एक बायोगैस प्लांट निर्मित करने में सफल हुए हैं। महिला सशक्तिकरण एवं वनों को बचाने में इस तकनीक की उपयोगिता को देखते हुए इसके प्रति ग्रामीणों के उत्साहित होने के प्रति हम आशान्वित हैं।

3. नये डिजाईनों के विकास से परम्परागत हस्तशिल्प का संरक्षण हस्तनिर्मित प्राकृतिक रंगों के उत्पाद :-

'अवनी' परंपरागत कला के विकास एवं संरक्षण हेतु विगत 8 वर्षों से कार्यरत है। हमारे कार्य से अधिकांश रूप से बौरा कुथलिया समुदाय की परंपरागत महिला कारीगर लाभान्वित हुई हैं। हमने परंपरागत कौशल का प्रयोग करते हुए बाजार की मांग के अनुरूप उत्पाद बनाकर एक आत्मनिर्भर उद्यम की स्थापना का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। इस उद्यम का प्रबंधन अवनी द्वारा प्रशिक्षित ग्रामीण युवाओं द्वारा किया जा रहा है। अवनी द्वारा स्थापित 6 फील्ड सेंटर्स के माध्यम से विकेन्द्रीकृत उत्पादन व्यवस्था जारी है।

इस वर्ष 39 गाँवों एवं तोकों के 345 कारीगरों द्वारा इस कार्यक्रम में सहभागिता की गई। इनमें से 90.72 प्रतिशत महिला प्रतिभागी हैं। 39 गाँवों में से हम 20 गाँवों में सघन रूप से कार्य कर रहे हैं तथा अन्य 19 गाँवों में व्यक्तिगत रूप से कारीगरों के साथ कार्य कर रहे हैं।

इस कार्यक्रम के माध्यम से इस वर्ष ₹0 5,17,045 की धनराशि मजदूरी के रूप में कारीगरों द्वारा अर्जित की गई। अधिकांश कारीगर कताई एवं बुनाई पर आंशिक रूप से निर्भर हैं। अतः इस कार्यक्रम से उन्हें पूरक आय प्राप्त हो रही है।

हमारे द्वारा उत्पादित हस्तनिर्मित एवं प्राकृतिक रंगों से रंगे उत्पादों ने बाजार में अपनी मजबूत जगह बना ली है। इन उत्पादों हेतु निर्यात बाजार की व्यापक संभावनाओं की खोज हमने कर ली है। इस क्रम में हमारे द्वारा फंडस ऑफ तिलोनिया के वित्तीय सहयोग से न्यूयार्क में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गिफ्ट फेयर में सहभागिता की गई। इस फेयर में डिजाइनरों के साथ हमारा संपर्क बढ़ा तथा हमारे उत्पादों के प्रति सकारात्मक अनुकिया प्राप्त हुई।

हमारे उत्पादों की विशिष्टता एवं उत्पादन में पर्यावरण मित्र तकनीकी के प्रयोग के कारण लगातार दूसरे वर्ष हमें संयुक्त राष्ट्र संघ की शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा श्रेष्ठ गुणवत्ता का प्रमाणपत्र प्रदान किया गया है। अक्टूबर 2007 में पेरिस में आयोजित इक्विट एक्सपो में भी हमारे उत्पादों को प्रदर्शित किया गया।

इस कार्यक्रम से संबंधित गाँवों का विवरण तालिका 8 में दिया गया है।

तालिका 8

केन्द्र का नाम एवं संबंधित गाँव						
क्र० सं०	धरमघर जिला बागेश्वर	दिगोली जिला बागेश्वर	त्रिपुरादेवी जिला पिथौरागढ़	चनकाना जिला पिथौरागढ़	सुकना जिला पिथौरागढ़	गढ़तिर जिला पिथौरागढ़
1	सिमगढ़ी	मांणा	महरौड़ी	चनकाना	सुकना	गढ़तिर
2	सौक्यूड़ा	दिगोली	भंडारी गाँव	मूनी	घाँगल	भनेलगाँव
3	धूरा	धौलानी	राईआगर	गोदा	धौलानी	पुरिंग
4	धरमघर	मटकोली	बना	पुंगरखोली	राममंदिर	पटोली
5	थुमा	नायल	त्रिपुरादेवी	—	—	—
6		ठांगा	मुंगराऊँ	—	—	—
7		औलानी	मानीपुर	—	—	—
8		सिमायल	हस्यूड़ी	—	—	—
9		कालीगाढ़	बोराखेत	—	—	—
10		देवलेत	बेरीनाग	—	—	—
11			दराती, मुनस्यारी			
			बनकोट			

कारीगरों का विवरण एवं मजदूर तथा बिक्री का ब्यौरा तालिका 9 में दिया गया है।

तालिका 9

कारिगर कौशल	2005—06	2006—07	2007—08
कतकर	167	197	211
बुनकर	144	51	45

निटर	30	18	12
टेलर	8	5	7
पश्मीना छटाईकर्ता	9	2	0
प्राकृतिक रंगाई कर्मी	9	6	6
निटर एवं कतकर	213	34	2
निटर एवं बुनकर	4	8	0
बुनकर एवं कतकर	5	1	5
बुनकर कतकर एवं निटर	7	0	0
पश्मीना छटाईकर्ता एवं निटर	32	2	0
पश्मीना छटाईकर्ता एवं कतकर	7	0	0
कतकर एवं रंगाई सामग्री संग्राहक	0	18	16
बुनकर निटर एवं रंगाई सामग्री संग्राहक	0	5	0
कतकर निटर एवं रंगाई सामग्री संग्राहक	0	5	0
कुल परंपरागत एवं प्रशिक्षित कारीगर	635	352	304
प्रशिक्षणार्थी	—	10	20
रंगाई सामग्री संग्राहक	39	26	21
कुल लाभान्वित सं०	674	388	345
कुल गाँव सं०	40	46	39
कुल उपार्जित आय (मजदूरी एवं मानदेय)	रु० 6,67,206	रु० 5,01,017	रु० 5,17,045
कुल बिक्री	रु० 27,99,887	रु० 23,46,153	रु० 27,64,590

कारिगरों का समूह कुमाऊँ अर्थकाफ्ट कौपरेटिव धीरे-धीरे सशक्त हो रहा है। वर्तमान में इसमें 54 सदस्य शामिल हैं। अब यह कौपरेटिव रेशम की कताई एवं निर्यात का कार्य संभाल रही है। को-ओपरेटिव द्वारा स्थाई खाता सं०, केन्द्रीय बिक्री कर एवं निर्यात लाइसेंस प्राप्त कर लिया गया है। वर्ष के दौरान कौपरेटिव द्वारा 73.55 किग्रा कते तागे का उत्पादन किया गया जिसके माध्यम से कारिगरों को रु० 40,441 की आय प्राप्त हुई।

कौपरेटिव द्वारा अमेरिका एवं फ्रांस में अवनी के उत्पादों का निर्यात करके रु० 35,633 की आय अर्जित की गई।

समुदाय के आधार पर कारिगरों का विवरण तालिका 10 में दिया गया है।

तालिका 10

विवरण	महिला	पुरुष	कुल
शौका (अनुसूचित जनजाति)	19	1	20
कुथलिया बोरा (अन्य पिछड़ी जाति)	245	25	270
अनुसूचित जाति	31	5	36
सामान्य	18	1	19
कुल	313	32	345

इस वर्ष नये लूम स्थापित नहीं किये गये। विगत वर्ष स्थापित किये गये चर्खे आंशिक समय में प्रयोग किये जा रहे हैं।

6 फील्ड सेंटर्स में उत्पादित वस्तुओं का विवरण तालिका 11 एवं 12 में दिया गया है।

तालिका 11

उत्पाद एवं कच्चा माल विवरण	उत्पादन 2005—2006	उत्पादन 2006—2007	उत्पादन 2007—08
शाल ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम	657	165	445
स्टोल ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम	592	523	941
मफलर पश्मीना, ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम	860	750	843
कपड़ा ऊनी, रेशम एवं ऊन तथा रेशम	907.46 मी०	629 मी०	293.23
पोंचो	—	69	15
लूम पर तैयार केप	17	0	—
साड़ी (5.5 मी)	18	6	15
जैकेट बच्चों के एवं बड़े तिब्बतन ऊन, मैरिनो एवं सिल्क एवं ऊन,	619	332	142
सिलाई से तैयार केप	130	36	—
जुराब			17 जोड़ी
स्वेटर एवं टोपी	57	3	64
दरी	35	13	5
मैरिनो कंबल	120	0	—
थुलमा एवं चुटका	26	45	67
स्कार्फ	—	48	—
कुशन कवर	—	25	73
आसन	—	64	8
टी कोजी	—	42	53
नमदा	—	6	—
बैड स्प्रेड	—	3	—
टांप्स			8
कुर्ता			5
पैट			2
कैफीशान			16
लंबा कोट			13
बोलेरो			1
तिब्बती ऊनी कंबल			3

तालिका 13

कताई	
विवरण	मात्रा किग्रा
कता तागा ऊन	529
कता तागा सिल्क	73.55
कता कपास	2.615
कुल	605.165 किग्रा

3.1 अवनी टीम का क्षमता विकास :-

उत्पादक सहकारिता के संचालन हेतु सक्षम मानव संसाधन विकसित करने के लिए सुपरवाईजरी टीम का प्रशिक्षण निरंतर जारी है। सुपरवाईजरी टीम को उद्यमिता के तकनीकी एवं वित्तीय पहलुओं के प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया है। इन सुपरवाईजरों में कुछ परंपरागत बुनकर नहीं हैं। अतः इनके लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल विकास आवश्यक है। इन प्रशिक्षणों में मुख्य रूप से लूम बुनाई एवं गुणवत्ता नियंत्रण के तकनीकी पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। कार्य के विभिन्न पहलुओं में आ रही समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की जाती है तथा सामूहिक रूप से उनका समाधान किया जाता है।

इस वर्ष 4 युवाओं को सुपरविजन प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किया गया। इनमें से 3 महिला प्रतिभागी हैं। 2 महिलाओं द्वारा प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया गया है तथा उनके द्वारा कमशः चनकाना एवं त्रिपुरादेवी केन्द्र में कार्य आरंभ कर दिया गया है। अन्य 2 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद दिगोली एवं सुकना सेंटर में नियुक्त किया जायेगा। विगत 2 वर्षों में स्थापित किये गये व्यवस्थित ढाँचे के परिणामस्वरूप वर्तमान में दस्तावेजीकरण, सूचना प्रबंधन एवं स्टॉक प्रबंधन कार्य की गुणवत्ता में काफी सुधार आया है। वर्तमान में यह व्यवस्था कुशलतापूर्वक कार्य कर रही है। प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 13 एवं 14 में दिया गया है।

तालिका 13

कौशल विकास

क्र०सं०	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	प्रशिक्षक
1	एकाउण्ट्स	1-4-07 से 31-3-08	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	दिवान राम	दीपा मेहता तेज नारायण सिंह
2	स्टांक	26 सितंबर 07 से जारी	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	शंकर पंत	रजनीश पंत
3	स्टांक, तैयार माल	26 नवंबर 07 से जारी	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	मुन्नी टम्टा	कमला रावत
4	स्टांक	15-5-07 से अगस्त 07	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	बसंती	संतोषी धपोला
5	स्टांक	6-9-07 से जनवरी 08	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	सरिता बोरा	संतोषी धपोला
6	स्टांक	नवंबर 07 से जनवरी 08	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	कांति चन्पाल	संतोषी धपोला

तालिका 14

मुद्दा आधारित प्रशिक्षण

क्रम स०	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	संदर्भ व्यक्ति संगठन
1	वयस्क साक्षरता	23-5-07 से 27-5-07	अवनी सेंटर त्रिपुरादेवी	लता, सीता, शोभा, बबीता, ज्योति, शोभा 2, एवं कमला देवी	श्री कमल, अल्लारिपु
2	स्वास्थ्य	11-6-07 से 28-6-07	आरोही, ग्राम सतोली, जिला नैनीताल	कमला देवी	डां बासु
3	विकासात्मक मुद्दे एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका	16-5-07 से 17-5-07	निर्मला कान्वेंट स्कूल काठगोदाम	राजेन्द्र जोशी	
4	ग्रामीण स्वास्थ्य बीमा	27-7-07 से 28-7-07	त्रिपुरादेवी	अवनी टीम एवं ग्राम महरौड़ी, सेला, बानड़ी, रावलगाँव एवं पहर के प्रतिभागी	संगीता बेन एवं ज्योति बेन सेवा अहमदाबाद
5	संस्थागत विकास कार्यशाला	4-2-08 से 7-2-08	कोणार्क	अवनी टीम	क्रिस अंडरहिल, सुब्रत मिश्रा, वंदना बेदी एवं बेन डिकसन
6	विश्व पर्वतवासी संगठन की ग्राम स्तरीय बैठक	29-2-08	त्रिपुरादेवी केन्द्र	16 गाँवों के 88 प्रतिभागी	राजेन्द्र, जगदीश एवं ललिता
7	संस्थागत विकास कार्यशाला का फालोअप	3-3-08	त्रिपुरादेवी केन्द्र	अवनी टीम	

कारिगरेण हेतु आयोजित कौशल आधारित प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 15 में दिया गया है।

तालिका 15

क्रम स०	प्रशिक्षण विषय	अवधि	स्थान	प्रशिक्षणार्थी	संदर्भ व्यक्ति/ संगठन
1	टेलरिंग	13-6-07 से 13-10-07	त्रिपुरादेवी केन्द्र	रेखा, पुष्पा एवं गीता	शोभा आर्या
2	रंगाई		त्रिपुरादेवी केन्द्र	नीरू एवं रेनू	धीरज पंत
3	टेलरिंग	17-10-07 से 28-10-07	त्रिपुरादेवी केन्द्र	पार्वती, गीता, भरत, शब्जीत एवं जीवंती	कीटो एवं इलियट, फैशन डिजाईनर फ्रांस
4	सिबोरी रंगाई एवं प्रिंटिंग	26-11-07 से 10-1-08	त्रिपुरादेवी केन्द्र	धीरज, जगदीश, रेनू, हंसा, सीता	बियट्रिस देवराल, इंडस्ट्रियल

				एवं हेमा	डिजाईनर फ्रांस
5	बुनाई सुपरविजन	1 दिसंबर 07 से जारी	दिगोली केन्द्र	ललिता बोरा	हरीश पंत
6	बुनाई सुपरविजन	1 दिसंबर 07 से जारी	सुकना केन्द्र	विनोद उपाध्याय	हरीश टम्टा
7	बुनाई	सितंबर 07 से जारी	धरमघर केन्द्र	कमला, दीपा एवं गंगा	कमला राठौर
8	बुनाई	अगस्त 07 से जारी	दिगोली केन्द्र	अनीता, अनीता देवी, हीरा देवी एवं कविता	हरीश पंत
9	बुनाई	जनवरी 08 से जारी	चनकाना केन्द्र	वंदना, डौली, रश्मि एवं चंद्रकला	कमला बोरा
10	रेशम कताई	1-4-07 से 15-5-07	गढ़तिर केन्द्र	मीरा बोरा एवं कमला बोरा	आन सिंह बोरा
11	रेशम कताई	1-11-07 से 31-1-08	गढ़तिर केन्द्र	हिमानी बोरा एवं सीमा बोरा	आन सिंह बोरा

3.2 उत्पाद डिजाईन :-

इस वर्ष के दौरान अमेरिका एवं फ्रांस के डिजाईनरों की सहायता से नये डिजाईन तैयार किये गये।

- हमने न्यूयार्क गिफ्ट फेयर में प्रदर्शन हेतु 'एड टु आर्टिजन' के डिजाईनरों के साथ मिलकर अपने उत्पादों के नये स्वरूप का संग्रह तैयार किया। डिजाईनरों द्वारा पुनः प्रयोग किये गये कपड़े से कुशन कवर भी तैयार किये गये जिनको न्यूयार्क गिफ्ट फेयर एवं दिल्ली गिफ्ट फेयर में काफी सराहना मिली।
- फ्रांसीसी डिजाईनर, एलियट कूस्टन द्वारा अवनी के ग्रामीण टेलरों को 5 नये डिजाईन के परिधान विकसित करने हेतु प्रशिक्षित किया गया। सुश्री एलियट कूस्टन द्वारा इस प्रशिक्षण हेतु निशुल्क सेवाएँ प्रदान की गईं। इस कार्यशाला के परिणाम काफी सकारात्मक रहे। कार्यशाला के दौरान बनाये गये काफीशान भारत एवं फ्रांस में काफी सराहे एवं बिक्री किये गये।
- सुश्री कीटो जोकि हस्तनिर्मित कपड़े के विशेषज्ञ हैं तथा फ्रांस में विगत 20 वर्षों से अधिक समय से हस्तनिर्मित बस्तुओं की प्रदर्शनी आयोजित कर रही हैं, उनके द्वारा नये डिजाईन के परिधान विकसित करने के साथ-साथ फ्रांस में अवनी उत्पादों की बिक्री में भी सहयोग प्रदान किया गया है।
- फ्रांस के ही एक अन्य औद्योगिक डिजाईनर द्वारा अवनी की प्राकृतिक रंगाई टीम को सिबोरी एवं प्रिंटिंग तकनीकी में प्रशिक्षित किया गया। हमने सिबोरी तकनीकी से रंगाई किये गये शाल एवं स्टोल की एक श्रृंखला विकसित की है।

निष्प्रयोजन प्रबंधन :-

विगत तीन वर्षों से हम निष्प्रयोज्य सामग्री को संशोधित करके नये उत्पाद बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

- लूम में उत्पाद के बाद बचे तागों की पुनः कार्डिंग, कताई तथा बुनाई द्वारा नये उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं।
- सिलाई विभाग में बची सामग्री को 'टाई डाई' करके कुशन कवर बनाये गये हैं, जिन्हें न्यूयार्क गिफ्ट फेयर में काफी पसंद किया गया।

मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग :-

हमने कनाडा, अमेरिका एवं फ्रांस के निर्यात बाजार में अपनी सहभागिता बढ़ाई है। वर्तमान में हम आर्डर पर ज्यादा कार्य कर रहे हैं जिससे पूँजी का प्रवाह निरंतर बना रहा है। इस प्रक्रिया से हालांकि बिक्री स्थिर अवस्था में है लेकिन हमें लगता है कि यह निरंतर व्यापार का मजबूत आधार बन सकता है।

- अवनी द्वारा इस वर्ष भारत में 12 प्रदर्शनियों में सहभागिता की गई।
- अवनी द्वारा विदेशों में भी प्रदर्शनियों में सहभागिता की गई। इस वर्ष हमने न्यूयार्क गिफ्ट फेयर के साथ – साथ फ्रेडस ऑफ तिलोनियां द्वारा आयोजित 'शो' में भी सहभागिता की। फ्रांस स्थित डिजाईनर समूह 'टैक्सचर' के माध्यम से हमारे उत्पादों को 'ईक्विट एक्सपो' में प्रदर्शित किया गया।
- हम अपने उत्पादों को खुदरा स्टोरों के माध्यम से भी बिक्री कर रहे हैं।
- इस वर्ष हमारे द्वारा कुल ₹ 27,64,590 की बिक्री की गई।
- इस वर्ष अवनी के 2 उत्पादों क्रमशः ईरी एवं ऊन तथा ईरी एवं मूंगा के स्टोल को संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा श्रेष्ठ गुणवत्ता का प्रमाणपत्र प्रदान किया गया है। हमारे उत्पादों को प्रदान किया गया सिल्क मार्क एवं काफ्टमार्क का प्रमाणपत्र जारी है।

प्रदर्शनियों एवं खुदरा दुकानों का विवरण तालिका 17 में दिया गया है।

तालिका 17

प्रदर्शनियों में सहभागिता	निर्यात खरीददार	खुदरा स्टोर
अकरुति वस्त्र, 2007 हैदराबाद	माईवा हैंडप्रिंट, कनाडा	पीपुल ट्री, दिल्ली
काफ्ट काउंसिल आफ इंडिया, होटल छोला शेराटन, चेन्नई	फ्रेंड्स ऑफ तिलोनिया, अमेरिका	ओशो वर्ल्ड, दिल्ली
सरस बाजार, देहरादून	डोसा, अमेरिका	नेचर शाप, आरोही
जवाहर कला केन्द्र, जयपुर	ली पासर, फ्रांस	सी सी आई सी, नई दिल्ली
महिला संकुल आई एम सी, मुम्बई	टैक्सचर, फ्रांस	शिल्पी शरायना, चेन्नई
कर कमल, देहरादून		एमथिस्ट, चेन्नई
एशियन हेरिटेज फाऊंडेशन, नई दिल्ली		कमला शाप, नई दिल्ली
ईक्विट एक्सपो – टैक्सचर पेरिस		
नेचर बाजार, दिल्ली हाट		
कानसर्न इंडिया, चंडीगढ़		
लोटस बाजार, रिषिकेश		
ट्रेड शो इंडियन एक्सपोज़, नौईडा		
न्यूयार्क गिफ्ट फेयर, अमेरिका		

3.4 प्राकृतिक रंगाई :-

हमारे द्वारा उत्पादित समस्त उत्पाद अवनी परिसर में प्राकृतिक रंगों में रंगे गये हैं। रंगाई सामग्री को प्राकृतिक रूप से उगाया एवं एकत्रित किया जाता है तथा उसके बाद महिला समूहों द्वारा हाथ से कूटा एवं पीसा जाता है। रंगाई सामग्री के प्रसंस्करण से महिला समूहों द्वारा कुल ₹ 9,910 की आय अर्जित की गई।

रंगाई हेतु पानी को पहले सोलर वाटर हीटर में गर्म किया जाता है तथा निष्प्रयोज्य पानी को संशोधित करके उसका प्रयोग सिंचाई हेतु किया जा रहा है।

रंगे गये तागे का विवरण तालिका 17 में दिया गया

तालिका 17

प्राकृतिक रंगाई		
विवरण	मात्रा किग्रा	सिबोरी
मैरिनो तागा	288.35	
तिब्बतन तागा	244.15	
सिल्क टसर, ईरी, मलबरी	286.96	
पशमीना	2	
कुल रंगा तागा	821.46	
मफलर	66	2
शाल	2	12
स्टोल एवं स्कार्फ	4	7

● **शोध एवं विकास :-**

नये शेड के विकास हेतु शोध कार्य जारी हैं जिनका व्यवस्थित दस्तावेजीकरण किया जा रहा है। हम स्थानीय प्रजाति के दो पौधों पर कार्य कर रहे हैं जिनसे नीला रंग प्राप्त हो सकता है। हमने नीले रंग की प्राप्ति हेतु अपने केन्द्र में पोलीगोनम को सफलतापूर्वक उगाया है। आगामी वर्ष में हम वृहत स्तर पर इसकी खेती का प्रयास करेंगे

● **पेंटिंग हेतु प्राकृतिक रंग :-**

हमने पौधों पर आधारित प्राकृतिक रंगों की एक श्रृंखला का उत्पादन जारी रखा है जो कि गैर रासायनिक एवं बच्चों के प्रयोग हेतु पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं। इन रंगों के निर्माण में हल्दी, हरडा, दाड़िम छिलका एवं अखरोट के छिलके का प्रयोग किया जा रहा है। इन सभी का उत्पादन एवं संग्रहण महिला समूहों द्वारा किया जा रहा है। इस प्रकार यह ग्रामीण स्तर पर आय उपार्जन का भी माध्यम बन रहा है। इस वर्ष हमने कुल 5 ली० प्राकृतिक रंगों की बिक्री से ₹0 2,750 की आय अर्जित की है। हमें अभी इसकी पैकिंग का स्वरूप निर्धारित करना है।

● **प्राकृतिक कुमकुम :-**

प्राकृतिक कुमकुम निर्माण इस क्षेत्र का काफी पुराना रिवाज है। कुमकुम का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों एवं शुभ अवसरों पर किया जाता है। परंपरागत विधि में हल्दी का प्रयोग कुमकुम बनाने में किया जाता था क्योंकि इसमें पर्याप्त औषधीय गुण विद्यमान हैं। दुर्भाग्यवश वर्तमान में परंपरागत कुमकुम के विकल्प के रूप में मरकरी युक्त रसायन का प्रयोग किया जा रहा है जो कि शरीर के लिए काफी नुकसानदायक है। हम महिला समूहों को कुमकुम निर्माण का प्रशिक्षण देकर इस परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। विगत वर्ष हमने कुल 14.6 किग्रा प्राकृतिक कुमकुम का निर्माण करके विभिन्न प्रदर्शनियों में इसकी बिक्री का प्रयास किया है। विगत वर्ष हमने ₹0 3,265 मू० का कुमकुम बिक्री किया। हमें आशा है कि इस वर्ष हम इसके बाजार को बढ़ाने में सफल होंगे।

● **अन्य रंगाई संस्थानों से समन्वय :-**

हम अपनी रंगाई कार्यशाला को दस्तावेजीकरण, शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित करना चाहते हैं। हम देश के अन्य भागों के रंगाई कारीगरों के साथ अनुभवों का आदान प्रदान एवं प्रशिक्षण में सहभागिता भी बढ़ाना चाहते हैं।

अवनी केन्द्र के साथ-साथ ग्रामीण किसानों के साथ भी आजीविका के श्रोत के रूप में भी रंगाई के पौधों की खेती करने की कार्ययोजना बना रहे हैं। रंगाई पौधों के मूल्यवर्धन हेतु हम डाई एक्सट्रैक्शन मशीन स्थापना की प्रक्रिया में संलग्न हैं। आरंभ में हम इस क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में उगने वाली एक खरपतवार से रंग निकालकर उसे प्रयोग करने योग्य रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। अगले वर्ष तक इस मशीन की स्थापना कर दी जायेगी।

3.5 हस्तशिल्प प्रसंस्करण में उपयुक्त तकनीकी का प्रयोग :-

हम प्राकृतिक रंगाई तथा रेशम एवं ऊन की धुलाई में वर्षा के संग्रहीत जल का प्रयोग करते हैं। रंगाई हेतु 60°C तक पानी सोलर वाटर हीटर में गर्म किया जाता है तथा उसके बाद बाकी गर्म करने हेतु गैस का प्रयोग किया जाता है जिससे ईंधन को बचाने में मदद मिली है। साबुन के स्थान पर रीठे के प्रयोग को प्राथमिकता दे रहे हैं। निष्प्रयोज्य जल को संशोधित करके सिंचाई हेतु प्रयोग किया जाता है।

4. महिला सशक्तीकरण :-

4.1 स्वयं सहायता समूह

4.1.1 लघु बचत :-

वर्तमान में अवनी 37 महिला समूहों के साथ कार्य कर रही है। इस वर्ष 8 नये महिला समूह क्रमशः बल्टा, चाख, बास्ती, दुदिला, ओखरानी, एरारी एवं जखेड़ी के गाँवों में गठित किये गये। ये समूह नियमित बचत कर रहे हैं तथा आपस में ऋण का लेन-देन का कार्य जारी रखे हुए हैं। महिला समूह आय उपार्जक गतिविधियाँ जारी रखे हैं।

महिला समूहों का विवरण तालिका 18 एवं 19 में दिया गया है।

तालिका 18

क्रम सं.	नाम का समूह	सदस्य सं०	कुल बैठक	बैठक में उपस्थिति	31 मार्च 07 तक जमा	07-08 में जमा	कुल जमा	बिगत वर्ष दिया गया ऋण	इस वर्ष दिया गया ऋण	वापस ऋण
1	लमजिंगड़ा	16	11	135	31,416	3,980	35,396	11,000	8,000	2,800
2	चन्तोला	15	0	0	10,029	3,990	14,019	0	0	0
3	सिमायल	17	5	49	11,880	4,080	15,960	0	2,000	0
4	माण्डा	12	5	45	26,577	4,279	30,856	18,000	9,000	3,000
5	धौलानी	17	6	75	13,115	3,400	16,515	0	12,000	5,000
6	महरौड़ी	14	11	119	10,652	3,420	14,072	6,000	6,000	0
7	सिमगढी	12	11	135	7,107	4,015	11,122	0	500	500
8	त्रिपुरादेवी	16	12	153	11,385	10,730	22,115	7,000	11,500	7,000
9	दिगोली	18	5	68	11,451	9,180	20,631	0	0	0
10	मटकोली	9	4	32	5,365	1,150	6,515	0	0	0
11	धरमधर	6	12	92	4,118	2,100	6,218	1,500	0	560
12	बेरीनाग	23	12	100	23,980	7,175	31,155	9,000	11,000	9,500
13	चनकाना	11	12	100	5,182	1,930	7,112	3,000	0	3,000
14	ठाँगा	14	5	46	23,496	2,260	25,756	33,000	0	15,000
15	सुकना	11	11	105	18,803	2,400	21,203	0	0	0

16	सिलिंगियाँ	17	12	141	2,792	3,310	6,102	0	0	0
17	गढ़तिर	9	12	82	1,320	850	2,170	0	0	0
18	मूंगराऊँ	21	11	145	5,345	3,490	8,835	0	0	0
19	हस्युडी	8	12	74	1,435	1,745	3,180	0	0	0
20	रावलगाँव	18	12	138	3,029	4,420	7,449	0	0	0
21	बना बैड	17	11	115	1,923	3,480	5,403	0	0	0
22	सेरा पहर	9	12	104	1,400	2,160	3,560	0	0	0
23	बना	12	11	73	1,620	2,640	4,260	0	0	0
24	सेला	14	12	132	2,210	3,370	5,580	0	0	0
25	कन्यूरपानी	10	12	105	1,160	2,400	3,560	0	0	0
26	ज्यूला	15	12	140	1,140	3,966	5,106	0	0	0
27	बानडी	8	12	87	580	1,790	2,370	0	0	0
28	औलानी	12	7	76	900	2,640	3,540	0	0	0
29	पिपली	15	12	148	780	3,680	4,460	0	0	0
30	ज्योति समूह बल्टा	11	12	103	0	2,663	2,663	0	0	0
31	प्रगतिशील समूह बल्टा	11	12	107	0	1,624	1,624	0	1000	0
32	चाख	13	8	78	0	2,140	2,140	0	0	0
33	बास्ती	7	7	48	0	1,740	1,740	0	0	0
34	दुदिला	23	7	99	0	1,740	1,740	0	0	0
35	ओखराड़ी	9	5	40	0	840	8,40	0	0	0
36	एराड़ी	17	3	30	0	1,020	1,020	0	0	0
37	जखेडी	12	3	39	0	720	720	0	0	0
		499	339	3358	2,40,190	1,16,517	3,56,707	88,500	61,000	46,360

तालिका 20

	2005-06	2006-2007	2007-2008
कुल समूह	19	29	37
कुल सदस्य	275	403	499
कुल आयोजित बैठकें	103	156	339
उपस्थित महिलाएँ	1022	1555	3358
वर्ष में कुल जमा	रु0 27,456	रु0 75,922	1,16,517
समूहों की कुल बचत	रु0 1,72,209	रु0 2,43,131	3,56,707
दिया गया ऋण	रु0 46,270	रु0 88,500	61000
ऋण वापसी	रु0 13,000	रु0 32,100	46360
पिछले 3 वर्षों में दिया गया कुल ऋण		रु01,52,770	195770

4.1.2 महिला समूहों के साथ आय उपार्जक कार्यक्रम :-

लघु बचत समूहों को उत्पाद कार्यक्रमों से जोड़ने हेतु उपयुक्त तकनीकि के साथ-साथ आय उपार्जक गतिविधियाँ आरम्भ की गई हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों को दो भागों में विभाजित किया गया।

- नकदी फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, फल प्रसंस्करण एवं प्राकृतिक रंगाई सामग्री संग्रहण।
- सहयोगी तकनीकि जैसे- सोलर ड्रायर, बायोगैस, पॉलीहाउस, वर्मिकम्पोस्ट पिट निर्माण आदि।

प्रशिक्षणों का विवरण तालिका 21 एवं 22 में दिया गया है।

तालिका 22

क्र० सं०	प्रशिक्षण विषय	स्थान	सहभागी समूह	अवधि	संदर्भ व्यक्ति	सहभागी सं०
1	पालीहाऊस निर्माण एवं उत्पादन तकनीक	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	अवनी सामुदायिक कार्यकर्ता एवं ग्रामीण किसान	4-11-07 से 5-11-07	श्री शम्भू काण्डपाल कसार ट्रस्ट बागेश्वर	6
2	ड्रिप इरीगेशन	अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी	अवनी सामुदायिक कार्यकर्ता एवं ग्रामीण किसान	20-2-08 से 21-2-08	सत्येन्द्र मिश्रा एवं राजेश कुमार आई डी ई लखनऊ	12
कुल सहभागी						18

महिला समूहों द्वारा विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा से उन्नत किस्म का बीज प्राप्त करके उसकी खेती का कार्य जारी है।

- 5 महिला समूहों द्वारा अधिक पैदावार वाला 51 किग्रा धान का बीज बोया गया।
- 6 गाँवों के महिला समूहों के 42 सदस्यों द्वारा 287 किग्रा हल्दी बोई गई।
- अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी में 40 किग्रा हल्दी बोई गई।
- कुमकुम निर्माण हेतु 84 किग्रा हल्दी महिला समूहों से खरीदी गई जिसके माध्यम से सदस्यों को रू० 2,520 की आय प्राप्त हुई।
- अवनी केन्द्र के फार्म से 56 किग्रा हल्दी कुमकुम निर्माण हेतु खरीदी गई।

4.2 बालिका शिक्षा :-

हम उन गरीब परिवारों की बालिकाओं की शिक्षा हेतु सहयोग जारी रखे हैं, जिन्हें वित्तीय कठिनाइयों के कारण अक्सर स्कूल से दूर रखा जाता है। यह प्रयास पूर्ण रूप से व्यक्तिगत दानदाताओं के सहयोग पर निर्भर है।

वर्तमान में हम 8 गाँवों की 11 बालिकाओं को इस कार्यक्रम के तहत सहयोग प्रदान कर रहे हैं। जनपद अल्मोड़ा के एक स्कूल को भी हम इस कार्यक्रम से सहायता प्रदान कर रहे हैं।

वर्ष 2007-08 में बालिका शिक्षा हेतु प्राप्त कुल आर्थिक सहयोग रू० 1,025

किताबों, ड्रेस एवं ट्यूशन फी पर खर्च -

रू० 35,440

(ग्राम बल्टा के स्कूल का खर्चा भी शामिल)

4.3 वयस्क साक्षरता :-

गाँवों में वयस्क साक्षरता की कक्षाएँ जारी हैं। अध्यापिकाओं के क्षमता विकास हेतु एक प्रशिक्षण का आयोजन 'अल्लारिप्पु' के साथ आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों द्वारा सहायक सामग्री का भी निर्माण किया गया।

ग्राम दिगोली, सुकना एवं त्रिपुरादेवी में ग्रामीण पुस्तकालय स्थापित किये गये हैं। नव साक्षरों के लिये 'पिटारा' एवं 'उत्तरा' जैसी पत्रिकाएँ भी निरंतर मंगाई जा रही हैं। दिगोली, सुकना एवं धरमघर सेंटर में कंप्यूटर भी स्थापित किये गये हैं। इन केन्द्रों के सुपरवाईजरी टीम एवं ग्रामीण युवाओं को कंप्यूटर संचालन में प्रशिक्षित करने हेतु एक प्रशिक्षक शीघ्र ही भेजा जायेगा।

कुछ समस्याओं के कारण गढ़तिर केन्द्र में साक्षरता कार्यक्रम बंद करना पड़ा है।
साक्षरता केन्द्रों का विवरण तालिका 21 एवं 22 में दिया गया है।

तालिका 21

केन्द्र का नाम	विद्यार्थियों की संख्या	आयु वर्ग			
		5-10	11-19	20-40	41-50
चनकाना	10	—	—	10	—
गढ़तिर	—	—	—	—	—
दिगोली	9	—	—	9	—
त्रिपुरादेवी	6	—	—	4	2
सुकना	8	—	—	6	2
कुल	33	—	—	29	4

तालिका 22

केन्द्र का नाम	विद्यार्थियों की सं०	विद्यार्थियों की प्रगति				
		कहानी पढ़ना	आसान पैराग्राफ	शब्द	स्वर व्यंजन	जिन्हें स्वर व्यंजन सीखने हैं
चनकाना	10	—	3	3	2	2
गढ़तिर	—	—	—	—	—	—
दिगोली	9	—	—	—	3	3
त्रिपुरादेवी	6	—	3	4	1	1
सुकना	8	—	—	2	—	6
कुल	33	—	6	9	6	12

4.4 बच्चों हेतु खेल गृह

त्रिपुरादेवी केन्द्र में बच्चों हेतु खेल गृह निर्माण कार्य आरंभ किया गया है। इस खेल गृह का निर्माण स्थानीय सामग्री जैसे लकड़ी, बांस, घास एवं मिट्टी से किया जा रहा है। इस खेल गृह के निर्माण से बच्चों को एक साथ खेलने एवं सामूहिक रूप से सीखने हेतु सुरक्षित जगह प्राप्त होगी।

5. वर्षा जल संग्रहण एवं निष्प्रयोज्य जल का पुनः प्रयोग :-

घरेलू प्रयोग के लिये वर्षाती पानी के प्रयोग से अंतोतगत्वा महिलाओं पर कार्य का बोझ कम होता है। हम इस व्यवस्था की सफलता को प्रदर्शित करने हेतु विगत कई सालों से कार्य कर रहे हैं। इस कार्य का आरंभ हमने अवनी केन्द्र में वर्षा के जल के प्रयोग के प्रदर्शन से किया है। अवनी केन्द्र में रहने वाले 35 कार्यकर्ताओं, सामूहिक भोजनालय, प्राकृतिक रंगाई, हस्तशिल्प उत्पादों की धुलाई एवं छोटे शब्जी बगीचे की सिंचाई आवश्यकताओं की पूर्ति वर्ष में 7 महीने वर्षा के जल से हो रही है। अवनी के 3 फील्ड सेंटरों में भी वर्षा जल संग्रहण टैंकों का निर्माण किया गया है। दिगोली केन्द्र में 22,000 ली० क्षमता का वर्षा जल टैंक का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

विवरण तालिका 25 एवं 26 में दिया गया है।

तालिका 25

अवनी परिसर में वर्षाती जल संग्रहण	मात्रा 2005-06	मात्रा 2006-07	मात्रा 2007-2008
टैंकों की कुल सं०	3	4	4
कुल संग्रहण क्षमता	2,70,000 ली०	3,25,000 ली०	3,25,000 ली०
मानसून के दौरान कुल संग्रहीत जल	6,15,000 ली०	7,60,000 ली०	12,00,000 ली०
पानी की दैनिक खपत	5,000 ली०	5,000 ली०	5,000 ली०
कुल दिन जब वर्षाती पानी का प्रयोग किया गया	130 दिन	152 दिन	240 दिन
5 किलोमीटर दूर से ट्रक से पानी न लाने की एवज में बचत	रु० 20,418	रु० 38,000	रु० 60,000

धीरे-धीरे इस तकनीक को गाँवों तक भी प्रसारित किया गया है तथा स्कूलों में विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयोग हेतु वर्षा जल संग्रहण टैंको का निर्माण किया गया है। हमें उम्मीद है कि धीरे-धीरे ग्रामीण परिवार घर बनाते समय वर्षा जल संग्रहण टैंको का भी निर्माण करेंगे।

• निष्प्रयोज्य जल संशोधन :-

हमारे कार्य क्षेत्र में पानी की निरंतर विकट होती जा रही समस्या को देखते हुए हमने पानी के पुनः प्रयोग की दिशा में कार्य किया है। इस पानी को एक बार प्रयुक्त करने के बाद पुनः संशोधित करके सब्जी की सिंचाई हेतु प्रयोग किया जा सकता है। इस दिशा में कार्य करते हुए हमने ठंडे क्षेत्र हेतु एक जल संशोधन संयंत्र को विकसित करके उसका निर्माण किया है। इस संयंत्र के माध्यम से प्राकृतिक रंगाई के पानी समेत समस्त पानी को संशोधित करके हमारे केन्द्र में सब्जी उत्पादन हेतु प्रयोग किया जा रहा है।

6. प्राकृतिक कृषि :-

प्राकृतिक कृषि की विभिन्न पद्धतियों को प्रदर्शित करने हेतु अवनी केन्द्र के फार्म में बायोगैस स्लरी, वर्मिकम्पोस्ट एवं मिट्टी को पुनर्जीवित करने की समस्त तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। इस वर्ष विभिन्न गाँवों के 165 किसानों द्वारा वर्मिकम्पोस्ट पिटों का निर्माण किया गया। 28 किसानों द्वारा 3,960 किग्रा वर्मिकम्पोस्ट का उत्पादन किया गया।

अवनी केन्द्र त्रिपुरादेवी में भी 3 वर्मिकम्पोस्ट पिटों का निर्माण किया गया जिसमें 2,000 किग्रा वर्मिकम्पोस्ट का उत्पादन किया गया। वर्मिकम्पोस्ट एवं जल के पुनः प्रयोग से हमें इस वर्ष और अधिक सब्जी उत्पादन में मदद मिली है। इस वर्ष फार्म द्वारा कुल रु० 21,920 की आय अर्जित की गई।

फार्म एवं डेरी का उत्पाद विवरण तालिका 24 एवं 25 में दिया गया है।

तालिका 28

विवरण	बीज कीमत रु०	2005-2006		2006-2007		2007-2008	
		उत्पादन	आय रु०	उत्पादन	आय रु०	उत्पादन	आय रु०
उगल	12	8 गठ्ठे	40	23 गठ्ठे	115	26 गठ्ठे	156
मेथी	20	81 गठ्ठे	405	50 गठ्ठे	300	207 गठ्ठे	1449
फ्रासबीन	20	33 किग्रा	806	34.23 किग्रा	785	5 किग्रा	112
लहसुन	40	7.5 किग्रा	450	2.5 किग्रा	100	1.4 किग्रा	112
टमाटर	10			32.5 किग्रा	975	12.5	306

						किग्रा	
केला	0	102	204	151	302	106	306
मूली	0	पत्ते 43 गठठे जड़ 12 किग्रा	334	पत्ते 257 गठठे जड़ 17.55 किग्रा	1,438	पत्ते 168 गठठे जड़ 20.4 किग्रा	1452
भिंडी	5	14 किग्रा	277	0	0	4.85 किग्रा	110
शिमला मिर्च	5			0	0	—	0
ककड़ी	5	80 किग्रा	1600	22.35 किग्रा	344	15 किग्रा	300
हरी मिर्च	5	6 किग्रा	180	8.9 किग्रा	362	2.45 किग्रा	98
कददू	5	स्थानीय 97.5 किग्रा हाईब्रिड 19.5 किग्रा	980	131.75 किग्रा	1748	78.7 किग्रा	1102
मक्का	25		207	66	330	90	300
अदरक	100	23 किग्रा	1380	17.85 किग्रा	714	20 किग्रा	800
अरबी	20	16 किग्रा	256	पत्ते 4 गठठे जड़ 37 किग्रा	615	पत्ते 25 गठठे जड़ 26.4 किग्रा	623
करेला	0			0	0	73	1164
हल्दी	0	12 किग्रा	480	0	0	119.4 किग्रा	3752
मीठा करेला	0			0	0	0	0
धनिया	25	494 गठठे	988	303 गठठे	750	784 गठठे	3001
लाई	5	121 गठठे	615	206 गठठे	1,648	451 गठठे	2743
पालक	125	183 गठठे	1098	101 गठठे	606	330 गठठे	2092
माल्टा	0	0	0	50	100	294	588
नींबू	0	0	0	25	125	107	505
तोरई	20	0	0	8.45 किग्रा	228	0.5 किग्रा	12
मटर	0	0	0	.9 किग्रा	16	25.75 किग्रा	545
बैंगन	10	0	0	1 किग्रा	24	0	0
गीठी						2 किग्रा	40
हालन						12 गठठे	72
गोबी						10 किग्रा	140
शलजम						2.5 किग्रा	40
कुल	370		11,356		11,625		21,920

तालिका 25

विवरण	मात्रा	दर रू0	आय रू0
दूध ली0	737	16	11,792
वर्मिकम्पोस्ट किग्रा	2000	8	16,000
बायोगैस स्लरी टोकरी	360	3	1,080
उपरोक्त उत्पादन से कुल आय			28,872
घास एवं खली पर खर्च			4,725

7. रेशम की खेती – वन्य रेशम ईरी एवं मूंगा की खेती :-

ईरी एवं मूंगा की खेती हेतु नये किसानों को जोड़ने का कार्य जारी है। हालांकि इस कार्य हेतु वर्ष 07-08 में सरकारी सहयोग प्राप्त नहीं हो पाया। इस वर्ष ईरी एवं मूंगा की खेती का कार्य 8 नये गाँवों में आरंभ किया गया। हमने ग्राम बास्ती में ओकटसर की खेती का कार्य भी आरंभ किया है। रेशम कीटपालन का कार्य और अधिक किसानों द्वारा अपनाना इस बात का संकेत है कि स्थानीय स्तर पर कच्चे माल की प्राप्ति का मजबूत आधार विकसित हो रहा है।

इस वर्ष 11 गाँवों के 79 नये किसानों द्वारा 40 एकड़ भूमि में मूंगा भोज्य पौध, कांव एवं कटामर तथा 19.5 एकड़ भूमि में ईरी का पौधारोपण किया गया।

ग्राम सुकना एवं चनकाना के 9 किसानों द्वारा 12 नर्सरी बैडों का निर्माण किया गया। अवनी केन्द्र में भी 2 नर्सरी बैडों का निर्माण किया गया। इन स्थापित नर्सरियों से वर्ष 08-09 के पौधारोपण हेतु लगभग 2,000 पौध प्राप्त होंगे।

विगत वर्ष कुल 4 ईरी कीटपालन गृहों का निर्माण किया गया।

तालिका 26

गाँव का नाम	किसानों की सं०		पौधारोपण क्षेत्र (एकड़)		कुल किसान	कुल पौधारोपण क्षेत्र (एकड़)
	ईरी	मूंगा	ईरी	मूंगा		
सानीखेत	5	0	2.5	0	5	2.5
मुसलगाड़	3	0	1.5	0	3	1.5
राई	1	1	.5	1	2	1.5
महरौड़ी	1	4	.5	4	5	4.5
नरगोली	2	0	1	0	2	1
माण्डा दिगोली	11	0	5.5	0	11	5.5
ब्याती	1	0	.5	0	1	.5
वर्षायत	1	0	.5	0	1	.5
स्यालवे	2	6	1	6	8	7
चाख	0	8	0	8	8	8
भिनगड़ी	0	2	0	2	2	2
बेलकोट	2	0	1	0	2	1
चंतोला	10	16	5	16	26	21
चनकाना	0	3	0	3	3	3
कुल	39	40	19.5	40	79	59.5

7.1 प्रशिक्षण एवं परीक्षण कोकून पालन :-

इस वर्ष 11 गाँवों के 22 किसानों के साथ कीटपालन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। 9 गाँवों के 20 किसानों द्वारा 150 डीएफएल ईरी कीटपालन एवं 2 गाँवों के 2 किसानों द्वारा 50 डीएफएल मूंगा कीटपालन किया गया। कोकून उत्पादन के प्रयासों में हमें भरोसेमंद अंडों की आपूर्ति न होने, प्राकृतिक रूप से उगे मूंगा भोज्य पौधों के बिखरे होने एवं कीटपालन में कम अनुभव के कारण कुछ समस्याएँ आ रही हैं। इस समस्या के समाधान हेतु भरोसेमंद कीटांडा आपूर्ति चैनल से संपर्क एवं नये पौधारोपण से कोकून पालन में हमारी टीम एवं किसानों का आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा इस कार्यक्रम को वास्तव में आय उपार्जक कार्यक्रम बनाने में सहायता मिलेगी।

कोकून का कुल उत्पादन

ईरी कोकून 71.1 किग्रा
मूंगा कोकून 1136 कोकून
कोकून उत्पादन से कुल आय ₹0 5,544

इस वर्ष के दौरान हमने ओक्टसर की खेती को भी प्रोत्साहित किया है। ग्राम बास्ती में ओक्टसर कीटपालन हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया गया तथा 50 डीएफएल कीटांडों का पालन किया गया। इस कीटपालन से लगभग 1500 कोकून प्राप्ति की उम्मीद थी लेकिन बीमारी लगने एवं अनअपेक्षित वर्षा के कारण अधिकांश कीट मर गये। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों द्वारा केवल 308 कोकून उत्पादित किये गये।

तालिका 27

विवरण	2006-07	2007-08
कुल किसान - ईरी	50	39
कुल किसान - मूंगा	63	40
स्थापित नर्सरी		14
कुल पौधारोपण क्षेत्र	75.6 एकड़	59.5 एकड़
कुल आय	₹0 3,670	5,544

8. स्वास्थ्य सुरक्षा

8.1 स्वास्थ्य बीमा :-

सदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में भरोसेमंद स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव इस क्षेत्र की एक प्रमुख समस्या है। इस मुद्दे का दूसरा पहलू कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण गाँवों से दूर स्थित स्वास्थ्य सुविधाओं तक गरीब परिवारों की पहुँच न होना है। इस समस्या के समाधान हेतु हमने ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य बीमा के लाभों की चर्चा आरंभ की है। इस कार्यक्रम को स्वास्थ्य महिला संगठन अहमदाबाद एवं आई सी आई सी लोम्बार्ड के सहयोग से आगे बढ़ाया जायेगा।

हमने इस क्षेत्र में स्वास्थ्य महिला संगठन के सफल अनुभवों की जानकारी लेने हेतु उनके साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम के संदर्भ में ग्रामीण समुदाय के साथ विस्तृत चर्चा की गई लेकिन अपने भरसक प्रयासों के बावजूद हम ग्रामीण परिवारों को बीमा के भविष्य के फायदों के बारे में विश्वास में नहीं ले पाये हैं। ये परिवार और अधिक जल्दी लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमने इस कार्यक्रम को तब तक स्थगित कर दिया है जब तक जनता इसकी आवश्यकता व्यक्त नहीं करे।

इस संबंध में एक अन्य बीमा योजना विकास आयुक्त हस्तशिल्प कार्यालय द्वारा आरंभ की गई है। इस कार्यक्रम में प्रीमियम में सरकारी मदद के कारण ग्रामीणों ने हल्की रुचि प्रदर्शित की है।

8.2 स्वास्थ्य शिविर

स्वास्थ्य क्षेत्र में हमारी छोटी पहल के तहत हमने 2 डॉक्टरों के साथ 2 स्वास्थ्य शिविरो का आयोजन किया। इस शिविरों का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में होने वाली सामान्य बिमारियों के इलाज के साथ साथ रोगों से बचाव की जानकारी देना भी था।

हम एक अन्य संस्था, 'आरोही' के साथ मिलकर इस क्षेत्र में सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा आरंभ करना चाहते हैं जिसके माध्यम से सदूरवर्ती गाँवों की स्वास्थ्य समस्याओं को समझा जा सके। हमें उम्मीद है कि हम अगले वर्ष तक इस कार्ययोजना को ठोस रूप देने में सफल होंगे।

तालिका 28

क्रम सं०	अवधि	स्थान	डॉक्टर	प्रतिभागी सं.
1	4-6-07 से 6-6-07	ग्राम दिगोली जनपद बागेश्वर उत्तराखंड	डा० सुशील शर्मा, आरोही, ग्राम सतोली, जिला नैनीताल	45
2	22-11-07 से 23 -11-07	अवनी त्रिपुरादेवी	डॉ एस श्रीनिवासन, इंद्रप्रस्थ अपोलो क्लिनिक, नई दिल्ली	42
	कुल			87

9. कार्यशाला एवं बैठकें :-

• विश्व पर्वतवासी संगठन बैठक, काठमांडू -

विश्व पर्वतवासी संगठन की क्षेत्रीय संगठन की बैठक दिनांक 31 मार्च से 1 अप्रैल 08 तक काठमांडू नेपाल में आयोजित की गई। बैठक में भारत एवं नेपाल के 25 प्रतिनिधियों द्वारा सहभागिता की गई। इस बैठक का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र हेतु प्रस्ताव तैयार करना था। अवनी इस संदर्भ में प्राकृतिक रंगाई एवं उपयुक्त तकनीक के क्षेत्र में कार्य करने हेतु संसाधन केन्द्र की स्थापना के लिये प्रस्ताव तैयार करेगी।

- अवनी के कार्यों का प्रस्तुतीकरण दिनांक 27 अप्रैल 2008 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, लोधी रोड नई दिल्ली में किया गया। इस प्रस्तुतीकरण हेतु काफ़्ट रिवाइवल ट्रस्ट द्वारा अवनी को आमंत्रित किया गया था।
- प्राकृतिक रंगाई के संदर्भ अवनी के कार्यों का प्रस्तुतीकरण माह अप्रैल 2008 में केन्द्रीय कुटरी उद्योग द्वारा आयोजित सेमिनार में किया गया। इस सेमिनार का आयोजन 'राजीव गाँधी हस्तशिल्प भवन' नई में किया गया था।
- इस वर्ष हमारे द्वारा अगस्त 2007 में संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित न्यूयार्क गिफ्ट फेयर में भी सहभागिता की गई तथा हमारे उत्पादों को ऐड टु आर्टिजन के स्टाल में प्रदर्शित किया गया। इस भ्रमण के दौरान हमें न्यूयार्क में कुछ खरीददारों एवं वरिष्ठ डिजाइनरों से सीधे संपर्क का मौका मिला।
- न्यूयार्क विश्वविद्यालय अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त 'पार्सन स्कूल ऑफ डिजाइन' में अवनी के कार्यों का प्रदर्शन किया गया।
- हमने अपने कार्यों का प्रस्तुतीकरण 'ऐड आस्टिन' के सहयोग से टैक्सास विश्वविद्यालय में भी किया।

- हिमालयन क्लब, नई दिल्ली द्वारा भी हमें 12 दिसंबर 2007 में भारत पर्यावास केन्द्र नई दिल्ली में अवनी के कार्यों के प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित किया गया।

10. विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक :-

इस वर्ष विभिन्न संस्थानों के 6 विद्यार्थियों एवं 3 स्वयंसेवकों द्वारा हमारे केन्द्रों में सहायता प्रदान की गई। विद्यार्थी निम्नलिखित संस्थानों से आये—

टवेंट विश्वविद्यालय, नीदरलैण्ड

फ्री विश्वविद्यालय ब्रुसेल्स, बेल्जियम

श्री राम कालेज ऑफ कामर्स, दिल्ली

राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद

इस वर्ष 'आई वायलेंटियर' कार्यक्रम से भी हमारा जुड़ाव हुआ जो कि विभिन्न संस्थानों में आंशिक समय के लिये विद्यार्थियों को नियुक्त करता है। सभी स्वयंसेवकों को छोटे-छोटे कार्य दिये गये जो उनके द्वारा पूर्ण किये गये।

11. वर्ष 07-08 के दौरान मेहमान

इस वर्ष विभिन्न क्षेत्रों से काफी संख्या में मेहमान अवनी केन्द्र में आये। यह हमारे लिये काफी उत्साहवर्द्धक रहा। कुल 61 मेहमान इस वर्ष अवनी केन्द्र में भ्रमण हेतु आये।

विवरण	भारतीय	विदेशी	कुल
विजिटर	14	15	29
स्वयंसेवक	4	9	13
स्कूल/कालेज के विद्यार्थी	10	0	10
सरकारी अधिकारी	8	0	8
डिप्लोमा विद्यार्थी	1	0	1
कुल	36	24	61

12. अन्य संस्थानों से सहयोग :-

बेयरफुट कालेज, तिलोनियां राजस्थान
हुनरशाला गुजरात
राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान, अहमदाबाद
कुमोऊ आर्टिजन गिल्ड, रानीखेत
आरोही, नैनीताल
अंकुर साइंटिफिक, बड़ौदा
विवेकानंद कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग
पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर
काफ्ट रिवाइवल ट्रस्ट नई दिल्ली
काफ्ट कौंसिल ऑफ इंडिया, चेन्नई
काफ्ट कौंसिल ऑफ इंडिया, दिल्ली
काफ्ट कौंसिल ऑफ इंडिया, हैदराबाद
सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम, नई दिल्ली
स्वाश्रयी महिला संघ अहमदाबाद
अल्लारिपु दिल्ली
उत्तरांचल अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण, देहरादून
श्रमिक भारती, कानपुर
आल इंडिया काफ्ट वर्कर्स एसोशियेशन, नई दिल्ली
सिल्क मार्क आर्गनाइजेशन ऑफ इंडिया, मुंबई
दस्तकार, नई दिल्ली
रूरल वालंटियर सेंटर, आसाम
गोधीग्राम ट्रस्ट, तमिलनाडु
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर
रेशम विभाग देहरादून एवं हल्द्वानी
फंडस ऑफ तिलोनियां, अमेरिका
अर्थ नेटवर्क, जापान
विश्व पर्वतवासी संगठन, फ्रांस
ऐड टु आर्टिजन, अमेरिका
कूलर गारौस, लौरेस, फ्रांस
टैक्सचर, फ्रांस
ली पासर डैकोरेशन, फ्रांस

13. हमारे संस्थागत वित्तीय सहयोगी :-

वोल्कार्ट विजन इंडिया, नई दिल्ली
इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, न्यूयार्क
फोर्ड फाऊंडेशन, नई दिल्ली
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर
रेशम विभाग देहरादून एवं हल्द्वानी
उत्तरांचल अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण, देहरादून
विश्व पर्वतवासी संगठन, फ्रांस
एशडन अवार्ड, इंग्लैंड
प्राकृतिक पूँजी का संरक्षण, अमेरिका

14. व्यक्तिगत दानदाता 2003—08

1. माँ प्रेम उषा, पूना
2. स्वर्गीय श्री भगवान दास जैन
3. श्री सुनील दाहिया, दिल्ली
4. सुश्री मोईना रे, देहरादून
5. सुश्री लक्ष्मी रे, कौसानी
6. सुश्री जैनिफर पिंटो, बेंगलूर
7. सुश्री पामेला चटर्जी, कौसानी
8. श्री सुरेश कुमार जैन, घरौदा
9. श्री गोपाल राम, पुणे
10. श्री देवराज वर्मा, दिल्ली
11. श्री आनंद कुमार गुप्ता, सोनीपत
12. श्री किशन गोपाल त्यागी, गन्नौर
13. सुश्री पामेला टोपले, पूना
14. डॉ स्मिता बोरा, पूना
15. सुश्री कैथरीन कानफिनो, कौसानी
16. सुश्री सुतिका
17. श्री किशन बोरा, पूना
18. श्री कैलाशनाथ, पूना
19. श्री अरून कुमार बोरा, पूना
20. श्री शैलेश कुमार, पूना
21. सुश्री जैन मती जैन, दिल्ली
22. सुश्री हिरोको ईशी, जापान
23. श्री किस फ्लायन जॉस
24. श्री प्रहलाद राठी, पूना
25. श्री अमर सेठ, दिल्ली
26. सुश्री राधा गोपाल
27. सुश्री समीरा बाली, अमेरिका

2. केस स्टडी :-

इन सफल कहानियों को प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य इस बात को दर्शाना है कि जब उपयुक्त अवसर व जगह उपलब्ध हों तो लोगों की छुपी हुई संभावनाएँ विकसित एवं सशक्त हो सकती हैं। हमारे कार्य में देखने को मिला है कि जिन लोगों को किसी कारणवश पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला उन्होंने मौका मिलने पर अपने जीवन को सँवारा है। सदूरवर्ती गाँवों के गरीब लोगों को अपनी प्रतिभा को निखारकर अपने पोंवों पर खड़ा करना, हमारे लिये एक सुखद अनुभव रहा है।

इस संदर्भ में हम यहाँ पर कुछ केस स्टडी का उल्लेख कर रहे हैं हालाँकि इस तरह की अनेक अन्य कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

केस स्टडी 1

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
दीपा बोरा	आठवीं कक्षा	2004	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनीं। अन्य प्रशिक्षणार्थियों को सीखने में मदद तथा सुपरवाईजर की अनुपस्थिति में बुनाई के तकनीकी पहलुओं की देखरेख ड्राफ्टिंग, वार्पिंग एवं अल्मोड़ा पैटर्न की शाल बुनाई में दक्षता

दीपा बोरा पिथौरागढ़ जनपद के बेरीनाग कस्बे से तीन किमी की दूरी पर स्थित चनकाना गाँव के गरीब परिवार से संबधित है। दीपा का परिवार अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कताई एवं बुनाई पर आधारित है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण दीपा कक्षा आठवीं से आगे पढ़ाई नहीं कर पाई। लेकिन अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिये स्वयं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का जज्बा दीपा में मौजूद था। जब दीपा ने सुना कि ग्राम चनकाना में बुनाई केन्द्र संचालित किया जा रहा है तो वहा प्रशिक्षणार्थी के रूप में केन्द्र से जुड़ गई तथा कुछ ही महीनों में केन्द्र की एक कुशल एवं मेहनती बुनकर बनकर सामने आई। दीपा ने स्वयं ही अल्मोड़ा पैटर्न के शाल की वार्पिंग एवं ड्राफ्टिंग भी सीखी।



विगत 4 वर्षों से दीपा एक कुशल बुनकर के रूप में कार्यरत है तथा लगभग ₹0 2,000 की आय मासिक रूप से अर्जित कर रही है। वह न केवल अपना खर्च वहन कर रही है बल्कि अपने परिवार की भी अधिकांश जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रही है। दीपा ने निम्नलिखित प्रकार से अपने परिवार की वित्तीय मदद भी की है।

- अपने घर में एक अतिरिक्त कमरे के निर्माण हेतु अपनी आय में से ₹0 5,000 का अंशदान।
- अपनी आय में से घर में बिजली फिटिंग का कार्य करवाया।
- अपने घर के लिये सीडी की खरीद।

- अपने लिये ₹ 6,000 मू० के सोने के जेवर बनवाये।

इसके अलावा दीपा मासिक रूप अपनी माँ को ₹ 400 से 500 तक घर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु देती है। इसके अलावा वह मासिक रूप से ₹ 200 की धनराशि गाँव के डाकघर में जमा करती है।

केस स्टडी 2

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ तिथि	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
अनीता देवी	अशिक्षित	2005	कतकर	कुशल रेशम कतकर एवं बुनकर सहायक	रेशम की कताई एवं बौबिन भराई सीखी

अनीता देवी ग्राम मटकोली की निवासी हैं जोकि नजदीकी सड़क मार्ग से 3 घंटे की दूरी पर स्थित है। वह एक गरीब परिवार से संबध रखती है जो कि ऊन की कताई बुनाई के साथ कार्य करता है। अनीता की शादी 22 वर्ष की उम्र में हो गई लेकिन शादी के बहुत जल्दी उसके पति ने दूसरी शादी कर ली तथा अनुली को परित्यक्त कर दिया। वह अपने मायके वापस आ गई तथा उसके परिवार ने उसकी देखभाल की। उसके पिता द्वारा अनीता के लिये एक कमरे का अलग मकान तो बनवा दिया लेकिन आजीविका का संकट उसके सामने बरकरार था। अनीता ने महसूस किया कि गारिमामय जीवन बिताने हेतु स्वयं की आजीविका कमाना एकमात्र रास्ता है। लेकिन कहाँ ? यह एक प्रश्न उसके सामने था।



महिला समूह के साथ बैठक के दौरान अनीता का संपर्क अवनी टीम के साथ हुआ तथा दिगोली केन्द्र में संचालित कार्यक्रमों की जानकारी उसे प्राप्त हुई। अनीता प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हो गई लेकिन आँखों की कमजोर रोशनी के कारण वह बुनाई करने में असमर्थ रही। अतः उसे बाबिन भराई एवं रेशम की कताई हेतु प्रशिक्षित किया गया। धीरे धीरे अनीता का आत्मविश्वास बढ़ने लगा तथा वह वयस्क साक्षरता कार्यक्रम से जुड़ गई जहाँ उसने स्वर व्यंजन एवं अपना नाम लिखना सीखा। वर्तमान में वह बुनकर सहायक एवं अपने गाँव में कतकर के रूप में कार्यरत है। वह अधिकांश रूप से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है लेकिन उसे अपनी आय और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है।

विगत वर्ष जब हम सौर ऊर्जा चालित चर्खे एवं रोशनी व्यवस्था की स्थापना की प्रक्रिया में संलग्न थे तो अनीता द्वारा अपने घर में इसकी स्थापना की इच्छा व्यक्त की गई। इस उपकरण की स्थापना में सरकारी सब्सिडी के बावजूद भी अनीता लाभार्थी के हिस्से का अंशदान करने में भी स्वयं को असमर्थ महसूस कर रही थी। इस हेतु अवनी द्वारा अनीता को ब्याजमुक्त ऋण उपलब्ध करवाया गया। इस प्रकार अनीता द्वारा अपने घर में सौर ऊर्जा चालित चर्खा एवं रोशनी उपकरण की स्थापना की गई। वर्तमान में अनीता रोशनी हेतु कैरोसीन का प्रयोग नहीं करती तथा छोटी छोटी किशतों में उसने ऋण की राशि को वापस करना आरंभ कर दिया है।

केस स्टडी 3

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
मीना राठौर	12 वीं कक्षा	2006	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई में पारंगत



मीना राठौर जनपद बागेश्वर के ग्राम सिमगढ़ी की निवासी हैं। मीना जब छोटी उम्र की थी तो उसके पिता का स्वर्गवास हो गया, मीना का पालन पोषण उसकी माँ द्वारा किया गया। परिवार के पास आय उपार्जन का स्रोत नहीं होने के कारण उसकी माँ के लिये मीना की पढ़ाई कक्षा 7 से आगे जारी रखना मुश्किल हो रहा था। तब से कक्षा 12 वीं तक मीना की पढ़ाई हेतु सहयोग अवनी द्वारा प्रदान किया गया। इस हेतु किताबों, ड्रेस एवं ट्यूशन का खर्चा अवनी के सहयोग से पूर्ण हुआ।

अपने स्कूल के दिनों से ही मीना स्कूल के बाद का बाकी समय धरमघर केन्द्र में बुनाई के बुनियादी कौशल सिखने में बिताने लगी। कक्षा 12 वीं उत्तीर्ण करने के बाद उसने धरमघर केन्द्र में नियमित बुनकर के रूप में कार्य करना आरंभ कर दिया। वर्तमान में मीना कुशल बुनकर के रूप में कार्य करते हुए मासिक रूप से ₹0 1500 से 2000 की आय अर्जित कर रही है। मीना के बड़ी बहन की शादी हो चुकी है तथा भाई शिमला में नौकरी करता है। मीना अपनी माँ के साथ रहते हुए परिवार की अधिकांश आर्थिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रही है। मीना का सपना अपने घर में एक अतिरिक्त कमरे का निर्माण करना है जिसके लिये उसने सरकार से अनुदान हेतु आवेदन किया है मगर अभी तक वह स्वीकृत नहीं हुआ है। लेकिन वह इस कार्य के लिये दृढ़प्रतिज्ञ है। इसके लिये मीना ने बैंक में खाता खोलकर नियमित बचत आरंभ कर दी है। अपने घर के समस्त खर्चे वहन करने एवं अपनी एवं अपनी माँ की पूर्ण देखभाल करने के साथ मीना ने बैंक खाते में ₹0 8,000 की धनराशि जमा कर ली है।

केस स्टडी 4

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
रेखा बोरा	8वीं कक्षा	2004	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनीं। अन्य प्रशिक्षणार्थियों को सीखने में मदद तथा सुपरवाईजर की अनुपस्थिति में बुनाई के तकनीकी पहलुओं की देखरेख ड्राफ्टिंग, वार्पिंग एवं अल्मोड़ा पैटर्न की शाल बुनाई में दक्षता



रेखा बोरा जनपद पिथौरागढ़ के ग्राम सुकना की निवासी है जोकि नजदीकी सड़क मार्ग से 40 मिनट की दूरी पर स्थित है। वह एक गरीब परिवार से संबध रखती है उसके पिता दैनिक मजदूरी पर कार्य करते हैं। रेखा की शादी 16 साल की उम्र में ऐसे व्यक्ति से हुई जो हमेशा उसकी उपेक्षा करता रहा तथा मानसिक यातना देता रहा। वह अपने पति के साथ 2 साल तक रही। एक दिन जब वह अपने माता पिता से मिलने आई थी तो उसने सुना कि उसका पति उसी दिन दूसरी शादी करने जा रहा है। रेखा को इस बात से भयानक सदमा लगा। वह अपने पिता के साथ सीधे विवाह स्थल पर पहुँच गई एवं शादी का विरोध किया। लेकिन काफी देर हो चुकी थी। उसे ₹50,000 की धनराशि के बदले समझौता करने एवं अपने पति को दूसरी शादी करने हेतु अनुमति देने एवं उसका घर छोड़ने हेतु मजबूर कर दिया गया। रेखा ने इस समझौते को मान लिया तथा अपने माता पिता के घर वापस आ गई। इसके बाद उसने महसूस किया कि गारिमामय जीवन जीने के लिये सतत आजीविका स्रोत की उपलब्धता आवश्यक है। लेकिन वह नहीं जानती थी कि यह अवसर कहाँ उपलब्ध होगा।

इस बीच उसका संपर्क ग्राम चनकाना केन्द्र की बुनाई सुपरवाईजर कमला बोरा से हुआ जिसने उसे ग्राम सुकना में बुनाई प्रशिक्षण की जानकारी प्रदान की। संयोगवश कमला बोरा को 2 माह के लिये सुकना केन्द्र में सुपरवाईजर का कार्य संपादित करने को भेजा गया। रेखा प्रशिक्षण में शामिल हो गई तथा कमला बोरा को अपने घर में रहने हेतु आमंत्रित किया। कमला की सहायता से वह 3 माह में कुशल बुनकर बन गई तथा अल्मोड़ा पैटर्न की शाल बुनाई करने लगी। वर्तमान में रेखा ₹1500 से ₹1800 मासिक रूप से अर्जित कर रही हैं तथा घर के खर्च चलाने में माता पिता को सहयोग प्रदान कर रही है। रेखा ने अपने गौवा के 2 लड़कों को भी बुनाई हेतु प्रशिक्षित किया है।

केस स्टडी 5

नाम	शैक्षिक योग्यता	अवनी के साथ कार्य आरंभ वर्ष	आरंभिक कार्य	वर्तमान कार्य	अर्जित कौशल
जीवंती देवी	द्वितीय कक्षा	2006	बुनाई प्रशिक्षणार्थी	रेशम एवं ऊन की कुशल बुनकर	रेशम एवं ऊन की बुनाई सीखी एवं कुशल बुनकर बनीं।



जीवंती देवी ग्राम मटकोली की निवासी हैं जोकि नजदीकी सड़क मार्ग से 3 घंटे की दूरी पर स्थित है। वह एक अत्यंत गरीब परिवार से संबध रखती है। उसके पिता अकुशल मिस्त्री के रूप में कार्य करते हैं। वित्तीय कठिनाईयों के कारण वह कक्षा 2 से आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख पाई। जीवंती की शादी 19 वर्ष की उम्र में हो गई। उसका वैवाहिक जीवन आनंददायक नहीं रहा।

वह शादी के बाद मात्र 3 माह तक बहुत कड़े अनुभवों के साथ अपने ससुराल में रह पाई। उसके पति एवं ससुरालवासियों द्वारा लगातार उसकी उपेक्षा की गई। अंततः उसने अपने माता पिता के पास वापस जाने का निर्णय कर लिया। आरंभ में उसे उम्मीद थी कि उसका पति उसे लेने जरूर आयेगा लेकिन वह नहीं आया। जीवंती आर्थिक रूप से स्वालंबी बनने की इच्छा रखती थी। ग्राम मटकोली में महिला समूह की बैठक के दौरान अवनी कार्यकर्ताओं से उसका संपर्क हुआ तथा उसने अपनी आजीविका के लिये कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। जीवंती को तुरंत ही दिगोली केन्द्र में जारी बुनाई प्रशिक्षण में शामिल होने हेतु आमंत्रित किया गया। वर्तमान में वह एक कुशल बुनकर के रूप में कार्य कर रही है तथा रेशम एवं ऊन की बुनाई करने में सक्षम है। इस वर्ष उसे थुलमा की बुनाई हेतु भी प्रशिक्षित किया गया जोकि उसके सेंटर में प्रथम बार आरंभ किया गया है। जब साक्षरता कार्यक्रम इस केन्द्र में आरंभ किया गया तो जीवंती इसमें शामिल हो गई। अब तक वह शब्द निर्माण करना सीख चुकी हैं।

13. अवनी के वित्तीय परिणाम का सारांश :-

वर्ष 2006-07 के वित्तीय परिणाम का सारांश निम्नलिखित प्रकार है-

वित्तीय परिणामों का सारांश

आय एवं व्यय

आय

बिक्री	38,50,766.00
अन्य आय	8,29,424.15
अनुदान (भारतीय)	13,71,663.00
क्लोजिंग स्टॉक	46,15,433.00
एफ0सी0आर0ए0 अनुदान	59,57,281.16

कुल	1,66,24,567.31
------------	-----------------------

व्यय

आरम्भिक स्टॉक	
अनुदान एवं अन्य व्यय	30,27,144.00
एफ0सी0आर0ए0 व्यय	46,04,170.42
	46,94,381.00

अप्रयुक्त अनुदान	
लोकल	
एफ0सी0आर0ए0	9,94,315.00
वर्ष की आय	12,62,987.16
	20,41,569.73

कुल	1,66,24,567.31
------------	-----------------------

बैलेन्सशीट

आय के स्रोत

पूँजीगत कोश	8,859,792.32
अचल सम्पत्ति हेतु अप्रयुक्त अनुदान	11,897,144.00
अप्रयुक्त अनुदान	2,471,481.73
वर्तमान देनदारियां	1,382,830.44

कुल	24,611,248.49
------------	----------------------

आय के प्रकार

अचल सम्पत्ति	13,834,005.14
कैश/बैंक	3,207,183.47
प्राप्ति योग्य अनुदान	695,978.08
अन्तिम स्टॉक	4,615,433.00
अन्य चल सम्पत्ति	2,258,648.80

कुल	24,611,248.49
------------	----------------------

